S-I
CORE-I

Q. Discuss the Pavlov theory of learning.
शिक्षण के पावलव के सिद्धांत की व्याख्या करो

Ans सीखने का अध्ययन मनोविज्ञान में काफी महत्वपूर्ण स्थान रखता है सीखना ही वह तत्व है जो किसी भी प्राणी को पूर्ण बना सकता है। लेकिन प्राचीन से ही विद्वानों के बीच एक प्रमुख समस्या यह थी कि प्राणी कैसे सीखता है?. इस समस्या के समाधान का पहला प्रयास थार्नडाइक ने किया और बताया कि प्राणी प्रयत्न एवं भूल के आधार पर सीखता है। इसी तरह कोहलर ने बताया कि सूझ के आधार पर सीखता है जबकि Pavlov ने बताया कि प्राणी अनुकूलन के आधार पर सीखता है और सीखने की समुचित व्याख्या हेतु classical conditioning का प्रतिपादन किया जिसे प्राचीन अनुकूलन भी कहा जाता है। जिसे स्पष्ट करते हुए पावलव ने बताया कि प्राणी स्वभाविक उत्तेजना के प्रति स्वभाविक अनुक्रिया तो करता ही है लेकिन जब प्राणी अस्वभाविक उत्तेजना यानि तटस्थ उत्तेजना के प्रति भी स्वभाविक अनुक्रिया करना सीख लेता है तो यही classical conditioning है। इसे और स्पष्ट करते हुए बताया कि जब किसी प्राणी के समक्ष स्वभाविक उत्तेजना के साथ-2 तटस्थ उत्तेजना यानि अस्वभाविक उत्तेजना को बार-2 उपस्थित किया जाता है तो प्राणी स्वभाविक उत्तेजना के प्रति जो व्यवहार करता है वही व्यवहार अस्वभाविक (तटस्थ) उत्तेजना के प्रति करना सीख लेता है, जो classical contioning है। पावलव ने स्वभाविक उत्तेजना को अनानुकूलित उत्तेजना (Unconditioned stimulus US) स्वभाविक अनुक्रिया को अनानुकूलित प्रतिक्रिया (Unconditioned Response UR) तटस्थ या अस्वभाविक उत्तेजना को (Conditioned stimulus CS) और स्वभाविक अनुक्रिया को Conditioned Response CR) की संज्ञा दी।

Scanned with CamScanner

S-I

CORE-I

पावलव ने अपनी बातों को और स्पष्ट करने के लिए एक प्रयोगात्मक अध्ययन कुत्ते पर किया गया। एक निर्वात कमरा लिया गया कमरे की बनावट ऐसी थी कि न तो कमरे की आवाज बाहर आ सके और ना ही बाहर की आवाज कमरे में आ सके। इस कमरे में एक कुत्ते को यंत्र विशेष से व्यवस्थित किया गया ताकि कुत्ते के गले में एक यंत्र लगा दिया गया जिससे होने वाले लार स्राव का पता चलता था। अब कुत्ते के सामने सबसे पहले भोजन दिया गया तो देखा गया कि कुत्ते ने भोजन देखते ही लार गिरा दिया यहां भोजन US स्वाभाविक उत्तेजना है जिसे देखते ही कुत्ते ने लार गिराने की स्वाभाविक अनुक्रिया UR किया लेकिन बाद अब कुत्ते को भोजन देने के पहले घंटी बजायी गयी इसके कुछ सेकेंड बाद भोजन दिया गया तो कुत्ता ~~भोजन व~~ घंटी की आवाज पर नहीं वरन भोजन देखकर लार टपकाया लेकिन अब यही क्रिया बार-2 दुहरायी गयी तो देखा गया कि कुत्ता भोजन देखे बगैर ही सिर्फ घंटी की आवाज पर ही लार टपकाना सीख गया यही classical conditioning है। यहां घंटी अनुकूलित उत्तेजना (CS) है जबकि लार का टपकना अनुकूलित प्रति अनुक्रिया (CR)।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि सीखने का यह सिद्धांत सीखने का काफी सरल और महत्वपूर्ण सिद्धांत है तथ्यों तो कुछ गुण स्पष्ट होते हैं —

1. पावलव के इस सिद्धांत की विशेषता का ही परिणाम है कि अनेक मनोवैज्ञानिकों ने अपना शोध कार्य इसके ही आधार पर किया जैसा Razran 1965 रैजरन ने बताया कि लगभग 6000 प्रयोग क्लासिकी अनुबंधन विधि द्वारा किये गए

S-I
CORE-I

जो इसकी महत्ता को स्पष्ट करता है

2. इस सिद्धांत का एक गुण यह भी है कि पावलव ने अपने सिद्धांत में जिन पदों का व्यवहार किया उसी का उपयोग बाद के मनोवैज्ञानिकों ने सार्थक चरों को परिभाषित करने में किया।

3. पावलव ने उत्तेजना-अनुक्रिया-संबंध का आधार अनुबंधन को माना और सभी प्रकार के सीखनों के लिए ~~अनुकूलित~~ अनुकूलित यानि स्वभाविक अनुक्रिया CR को मौलिक करके माना। हालांकि इस विचार से सभी मनोवैज्ञानिक सहमत नहीं है किन्तु इस संदर्भ में किए गए शोध कार्य में यह विचार मार्गदर्शक का काम किया है। जिस कारण इस सिद्धांत का शोध मूल्य बढ़ जाता है।

4. अपने सिद्धांत के माध्यम से पावलव ने वास्तविक घटनाओं की जड़ तक पहुंचने का प्रयास किया ~~और समझा कि~~ इनका प्रयास सीखने की ~~व्याख्या~~ सतही व्याख्या तक ही ~~सिमीत~~ सिमीत नहीं रहा बल्कि इन्होंने तत्व ~~व्या~~ व्याख्या पर भी बल दिया

5. पावलव के सिद्धांत का एक गुण यह भी है कि पावलव ने शिक्षण सिद्धांत तथा मनोविकृत विज्ञान के बीच पुनर्मेल का सफल प्रयास किया। इन्होंने पशुओं पर प्रयोग करके नींद चिकित्सा तथा औषध चिकित्सा की जो चर्चा की उसकी लहर आज भी व्याप्त है।

6. इस सिद्धांत की महत्ता इससे ही पता चलता है कि स्कीनर ने भी साधनात्मक अनुबंधन में पावलव के सिद्धांत के बहुत से संप्रत्ययों का व्यवहार किया है।

Scanned with CamScanner

S-I
CORE-I

7. सामाजिक शिक्षण के यह सिद्धांत काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है ~~क्योंकि सामाजि~~ जैसे - हम अपने मित्र के मित्र को अपना मित्र मान लेते हैं। अपने बड़े भाई के मित्र को बड़ा भाई मान लेते हैं इत्यादि।

DEMERITS इन उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट हो जाता है कि पावलव ने थार्नडाइक तथा कोहलर से अलग अपने प्रभावकारी विचार प्रस्तुत किये फिर भी कुछ-त्रुटियां रह ही गयी जिस कारण अन्य सिद्धांतों की तरह यह भी आलोचकों का शिकार हो गया -

1. इस सिद्धांत का पहला दोष यह है कि इसके आधार पर सामान्य परिस्थितियों के होने वाले शिक्षणों की व्याख्या संभव नहीं है

2. इस सिद्धांत के स्वाभाविक उत्तेजना (भोजन) के साथ-साथ तटस्थ उत्तेजना (घंटी) को बार-2 दुहराने पर ही कुत्ता घंटी की आवाज पर लार टपकाना सीखा लेकिन मनुष्य के कुछ शिक्षण ऐसे भी हैं जहाँ अभ्यास या पुनरावृत्ति की आवश्यकता नहीं पड़ती जैसे - आग छूने से हाथ जलता है या जहर खाने से व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है।

3. इस सिद्धांत का एक अन्य दोष यह भी है कि यह सिद्धांत प्राणी के व्यवहार को किसी चीज को सीखने के लिए साधनात्मक नहीं मानता है। जबकि स्कीनर ने स्पष्ट किया कि प्राणी का व्यवहार साधनात्मक होता है।

4. इस सिद्धांत के दोषयुक्त होने का एक संकेत यह भी है कि यह सिद्धांत किसी स्वाभाविक प्रतिक्रिया की भी व्याख्या नहीं करता है बल्कि एक ऐसी अस्वाभाविक

Scanned with CamScanner

S - I

CORE - I

अनुक्रिया की व्याख्या करता है जो आंशिक या अस्थायी होता है

5. इस सिद्धांत का एक प्रमुख दोष यह भी है कि जहाँ सीखने वाला प्राणी निष्क्रिय रहता है पावलव के अध्ययन में कुत्ते ने निष्क्रिय रहकर लार टपकाना सीखा। लेकिन यह बात सभी स्थानों पर लागू नहीं होता। क्योंकि व्यक्ति के सीखने पर रुचि तथा मनोवृत्ति का भी प्रभाव पड़ता है।

इन उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट होता है कि पावलव के सिद्धांत में कुछ दोष भी हैं जिससे प्रभावित होकर यह नहीं मान लेना चाहिए कि इस सिद्धांत की महत्ता ही नहीं है वरन् सच्चाई तो यह है बच्चों तथा पशु शिक्षण की व्याख्या में यह काफी सफल है साथ ही आलमगत भाव, संवेग, मनोवृत्ति प्रतीकों का निर्माण आदि की व्याख्या में भी काफी सहायक है। तथा व्यवहार परिमार्जन में भी यह सिद्धांत काफी सहायक है।